Read report on Summer POP: Watermelon

गरमा पी.ओ.पी.

फसल का नाम: तरबूज (Citrullus lanatus)

तरबूज की खेती- **10** डिसमिल जमीन के लिए

तरबूज की खेती से होने वाले लाभ:

- तरबूज गरमा मौसम में उगने वाली तथा 90 से 100 दिन वाली प्रमुख तरबूज फसल है |
- इसकी खेती मुख्य फसल के रूप पुरे खेत में अच्छी नगद आमदनी के लिए लगाई जाती है |
- तरबूज पोटासियम, मेगनेसियम एवं विटामिन A, C, B1, B5 एवं B6 का मुख्या श्रोत है |
- तरबूज शारीर को गर्मी से होने वाले नुकसान से बचाता है |

खेती करने का उचित समय:

सामान्यतः इस क्षेत्र में धान कटाई के बाद तरबूज की फसल लगाई जाती है | गरमा फसल में तरबूज की खेती केलिए 10 जनवरी से 15 फ़रवरी तक तरबूज की फसल के लिए उत्तम समय माना जाता है |

जमीन का प्रकार:

- तरबूज की खेती रेतीली मिटटी से लेकर चिकनी दोमट मिट्टियो तक में की जा सकती है विशेष रूप से नदियों के किनारे रेतीली भूमि में इसकी खेती की जा सकती है, जिसका pH मान 5.5 से 7.0 तक हो उत्तम मानी जाती है |
- समतल या हल्की ढाल वाली दोइन 2 एवं दोइन 3 जमीन तथा सिंचाई की व्यवस्था होने पर टांड 3 जमीन भी तरबूज के खेती के लिए उपयुक्त होता है |

फसल का उत्पादन बढाने हेतु कुछ महत्वपूर्ण कदम:-

1. बीज के उन्नत किस्म का चुनाव

   उद्देश्य:-

   किस्म का चुनाव बाजार के मांग को समझ कर करना चाहिए ताकि अच्छी उपज के साथ अच्छी मूल्य (price) भी मिल सके |

बिचड़ा तैयार करने की विधि:-

- तरबूज फसल के लिए पोलीट्यूब में बिचड़ा तैयार करने के लिए केचुवा खाद एवं मिट्टी को बराबर मात्र में मिलाना है |
- 10 डिसमिल जमीन में बिचड़ा तैयार करने के लिए खाद एवं मिट्टी के मिश्रण में 200 ग्राम ट्रैकोडारमा विरिडी के चूर्ण को मिलान है |
- तैयार मिश्रण को पोलीट्यूब में भरने के बाद एक-एक बीज डालना है |
- दुसरे या तीसरे दिन (48- 72 घंटे बाद) अंकुरण आने के बाद रिडोमिल –गोल्ड 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिला कर फुहारा से छिडकाव करना है |
- दो से चार पत्ता आने के बाद NPK 1919 को 80 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी में मिला कर सिंचाई करने से पौधे की बढ़वार अच्छी होती है |
- हर 7 दिन के अन्तराल पर एडमायर (कीटनाशक) 2 ग्राम 15 लीटर पानी में या नीमास्त्र एवं साफ़ (फुफुन्दनाशक) 2 ग्राम प्रति लीटर पानी या बिजमित का छिडकाव करना चाहिए |
- 20 - 21 दिन में नर्सरी में पौधा मुख्य खेत में लगाने के लिए तैयार हो जाता है |

नर्सरी में तैयार पौधे:-

- सिंचाई युक्त जमीन के लिए नाइट्रोजन 50 किलोग्राम, फास्फोरस- 40 किलोग्राम एवं 40 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टर के दर से देना चाहिए |

10 डिसमिल जमीन के लिए रासायनिक खाद की मात्रा:-

पोषक तत्वा		खाद की मात्रा	
• नाइट्रोजन	• 5 किलो	• यूरिया	• 7 किलो
• फोस्फोरस	• 4 किलो	• DAP	• 9 किलो
• पोटास	• 4 किलो	• पोटास	• 6 किलो

- सिंचाई युक्त जमीन के लिए नाइट्रोजन का आधा भाग तथा फोस्फोरस एवं पोटास का पूरा भाग खेत तैयार करते समय प्रारंभिक (बेसल) डोज़ के रूप में करना चाहिए | नाइट्रोजन की शेष मात्रा दो समान विभाजन में देना है - रोपाई के 30 दिनों बाद और रोपाई के 50-60 दिनों बाद।
- पौधा में फुल आते समय सूक्ष्मपोषक तत्व का छिडकाव करें।

8. सिंचाई प्रबंधन:

- तरबूज फसल की अच्छी उपज के लिए खेत में कम से कम 3 से 4 बार सिंचाई की आवश्यकता होती है | मिट्टी के प्रकार को देखते हुए सिंचाई की संख्या बढ़ भी सकती है |
- फल का आकार बड़ा होने के बाद सिंचाई रोक देनी चाहिए |
- अगर फसल लगते समय मिट्टी में नमी कम हो तो हलकी सिंचाई जरुर करनी चाहिए |

तना सुखना या पौधा मुरझाना 	• यह जीवाणु जनित बीमारी है	 • इस रोग से ग्रसित पौधे अचानक मुरझा कर मर जाते हैं	• अच्छा जल निकास प्रबंधन से काफी इस बीमारी को कम किया जाता है। • क्रोसिन एजी 1 ग्राम प्रति 5 लीटर पानी में मिला कर छिडकाव करना चाहिए	
पौडारी एवं डाउनी मिल्ड्यू 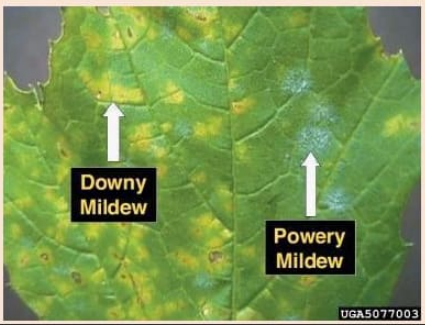	• यह एक फुफुन्द जनित बीमारी है	इस बीमारी में पत्तों के ऊपर सफ़ेद पौडर की तरह का दाग या पत्तीओं के किनारे जले हुए सा दिखाई देता है	• ट्रईकोडरमा विरड़ी (4 ग्राम / किलो) से बुआई से 24 घंटे पहले बीज को उपचारित करें। • ब्लू कॉपर/साफ़/ सिक्सार 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें। • जैविक फुफुन्द नाशक के रूप में महुआसत्र, सोठ्स्त्र 40-50 ml प्रति लीटर पानी में मिला कर हर 10 दिन के अन्तराल पर प्रयोग करना चाहिए	

	• एक कीट कई फलों को नुकसान पहुंचाती हैं।	• जैविक दवा के रूप में निमास्त्र, अग्निअस्त्र या हांड़ीकथ 40-50 ml प्रति लीटर पानी में मिला कर, 10 दिन में बदल बदल कर करना चाहिए।
जुगनूकीट 	• यह कीट पत्तियों को खाता है जिससे पौधों की बढ़त कम हो जाती है एवं उपज भी प्रभाबित होता है।	• जैविक दवा के रूप में निमास्त्र, अग्निअस्त्र या हांड़ीकथ 40-50 ml प्रति लीटर पानी में मिला कर, 10 दिन में बदल बदल कर करना चाहिए। • एकतारा 1 ग्राम 3 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें एवं 15 दिन के बाद कौंफिडोर 1 मिली लीटर 3 लीटर पानी में घोल कर 10 से 15 दिनों के अन्तराल पर 3 से 4 बार करें।

Revision #1
Created 29 January 2024 21:11:21 by Pooja Thyagi
Updated 29 January 2024 21:16:05 by Pooja Thyagi